Quadrant II - Transcript and Related Materials

Programme: Bachelor of Arts (S.Y.B.A)

Subject: Hindi

Paper Code: HNC 109

Paper Title: 'पाश्चात्य काव्यशास्त्र'

Unit: बिम्ब, प्रतीक, मिथक

Module Name: 'बिंब- भाग 2'

Module No: 16

Name of the Presenter: Mr. Salim Mohamed Gaded

बिम्ब का वर्गीकरण

पाश्चात्य काव्यशास्त्रियों ने बिम्ब के अनेक भेद दिए है किन्तु यह अत्यंत मुश्किल कार्य है क्योंकि इसका सही वर्गीकरण दुष्कर है। इन मुश्किलों के बावजूद रॉबिन स्कैलटन ने प्रयत्न किया है; इनके अनुसार साधारण बिम्ब , अमूर्त बिम्ब, तात्कालिक बिम्ब, संयुक्त बिम्ब। संकुल बिम्ब आदि है। दूसरी ओर एच. कुंबस भी संक्षिप्त अथवा व्यंजन बिम्ब, शिथिल अथवा प्रसृत बिम्ब ऐसे दो भेद मानते हैं। पर इन भेदों से कोई निश्चित मत व्यक्त नहीं किया जा सकता। किन्तु इंद्रिय-ग्रहण, कल्पना, स्मृति एवं काव्यार्थ की दृष्टि से बिम्ब के भेद हो सकते हैं। पाश्चात्य एवं भारतीय बिंबवादियों के विवेचन के बाद बिम्ब के निम्न वर्गीकरण स्वीकारे गए हैं।

1) ऐंद्रिय बिम्ब

2) प्रकृति संबंधी बिम्ब

3) जीवन संबंधी बिम्ब

4) मनोवैज्ञानिक बिम्ब

5) पारस्परिक या स्वछंद बिम्ब

6) केन्द्रीय या सहकारी बिम्ब

7) गीतात्मक या प्रबंधात्मक बिम्ब

ऐंद्रिय बिम्ब – बिम्ब योजना में ऐंद्रिय व्यापार प्रमुख रहता है इंद्रियों पर आधारित बिम्ब पाँच प्रकार के होते हैं 1) चाक्षुष बिम्ब 2) श्रव्य बिम्ब 3) स्पृश्य बिम्ब 4) घ्राण बिम्ब 5) आस्वाद बिम्ब

1) चाक्षुष या दृश्य बिम्ब

इस बिम्ब के माध्यम से कवि सादृश्य के माध्यम को उभारता है। सादृश्य विधायक अलंकारों में इसका स्वरूप देखा जा सकता है। दृश्य बिम्ब का सम्बन्ध नेत्रों से है. जब किसी काव्य को पढ़कर या सुनकर आँखों के सामने किसी घटना या वस्तु का चित्र सा उभर आता है तब वहाँ दृश्य बिम्ब होता है। उदाहरण-

1) "दिवसावसान का समय

मेघमय आसमान से उतर रही है

वह संध्या सुंदरी परी-सी

धीरे धीरे धीरे।"

2) "रश्मियों की सूक्ष्म सुइयों में रजत के तार भर,

शशिकला ने भू-वासन पर की कढ़ाई रात में।"

2) श्रव्य बिम्ब या नदात्मक बिम्ब

श्रव्य बिंब वे हैं जिनका आस्वादन श्रवणेंद्रिय के द्वारा किया जाता है। इसका प्रयोग प्रकृति-वर्णन, यात्रा, युद्ध आदि की अलंकार योजना में होता है। जब किसी काव्य को पढ़कर या सुनकर किसी वाद्य या अन्य प्रकार की ध्वनि का आभास होता है तब वहाँ श्रव्य बिम्ब होता है। उदाहरण

"झूम-झूम मृदु गरज-गरज घनघोर,

राग अमर अंबर में भर निज रोर।"

3) स्पृश्य बिंब

स्पृश्य बिंब-विधान में स्पर्श जनित संवेदनाओं से बिंब निर्धारित होता है। स्पृश्य बिंबों का विधान कुछ ही कवि सफलतापूर्वक कर सके हैं। स्पर्श बिम्ब का सम्बन्ध त्वचा से होता है. जब किसी काव्य को पढ़कर या सुनकर ऐसा आभास होता है कि किसी वस्तु की कोमलता या खुरदुरेपन ने हमें स्पर्श सा किया है, तब वहाँ काव्य में स्पर्श बिम्ब होता है।

1) जले जो रेत में तलुवे तो हमने ये देखा

बहुत से लोग वहीं छटपटा के बैठ गये।

2)"है स्पर्श मलय के झिलमिल सा,

संज्ञा को और सुलाता है।

पुलकित हो आँखें बंद किए

तंद्रा को पास बुलाता है।"

4) घ्राण बिंब

घ्राण बिंब का निर्धारण करना कठिन कार्य है। डॉ. नगेंद्र ने इस विषय में कहा है कि विश्व काव्य में ऐसे उदाहरण एकत्रित करना बड़ा जटिल कार्य है जिनमें घ्राण-बिंब प्रस्तुत हो। भिन्न-भिन्न पद्दों के आधार पर ऐसे बिंबों की सर्जना का प्रयास हुआ आवश्यक है किन्तु इसमें बिम्बत्व समाप्त हो जाता है। घ्राण बिम्ब का सम्बन्ध घ्राणेन्द्रिय से है. जब किसी काव्य को पढ़कर या सुनकर किसी वस्तु की सुगन्ध या दुर्गन्ध का आभास होता है, तब वहाँ घ्राण बिम्ब होता है।

1) सोंधी-सोंधी महक है मिट्टी की,

पहली-पहली फुहार में शामिल।

2) "इस इंदीवर से गंध भरी,

बुनती जाली मधु की धारा

मन मधुकर सी अनुराग मयी

बन रही मोहिनी सी कारा।"

5) आस्वाद्य बिंब

कवियों ने सौन्दर्य की दो स्वादों के रूप में कल्पना -माधुर्य एवं लावण्य। अतएव सौन्दर्य के आस्वाद की अभिव्यक्ति और आस्वाद्य-बिंबों का प्रयोग सरल होने के कारण प्रचुर मात्रा में किया जाता है। निराला का वर्णन दृष्टव्य है –

"कुकुरमुत्ते की कहानी सुनी

जब बहार से नबाब के मुँह में आया पानी।"

काव्य में बिम्ब की विशिष्टता

पाश्चात्य बिंबवादी समीक्षकों की मान्यता है कि बिम्ब कविता का सार तत्व एवं उसका अनुगुंजन है। उनके अनुसार कल्पना से जिस प्रकार के ज्ञान की उपलब्धि होती है वह बुद्धिपरक विश्लेषण से कहीं श्रेष्ठ होता है। डॉ. भागीरथ मिश्र ने बिम्ब को रचना का प्रमुख व्यापार स्वीकार करते हैं। इसके अतिरिक्त बिम्ब योजना काव्य में कुछ और भी महत्व रखती है जैसे

1) काव्यार्थ को पूर्णतया स्पष्ट करना (अभिव्यक्ति)

वास्तव में किसी भी बात को समझने के लिए हमारा प्रारम्भिक कार्य उसे अपनी कल्पना में प्रत्यक्ष करना है। कोई भी गूढ, दुरूह विचार हमें समझ में कठनाई से ही आता है , पर यदि उसे रूपायित कर दिया जाय अर्थात उसकी मुख्य विशेषता को स्पष्ट करनेवाली अप्रस्तुत वस्तुओं को प्रस्तुत कर उसके माध्यम से उसे समझाया जाय, तो वह शीघ्र और भलीभाँति स्पष्ट हो जाता है। महान कवि अनुभूति और कल्पनावाले होते हैं और अपनी कविता के माध्यम से वे अपने सूक्ष्म विचारों को समझाने के लिए बिम्ब सृष्टि का प्रयत्न करते हैं। उदाहरण जायसी ने जीवन की क्षणभंगुरता को इस तरह व्यक्त किया है

मुहमद जीवन जन भरन, रहट घटी कै रीति।

घरी जो आई जल भरी, धारी जनम गा बीति।

रहतघटी के व्यापार से जीवन का प्राण-सम्पन्न होना और उससे रहित हो जाने में प्राणहीन होने के व्यापार में समय की अल्पता को भलीभाँति स्पष्ट किया है।

2) भाव को संप्रेषित एवं उत्तेजित करना (भाव-सम्प्रेषण)

बिम्ब योजना के मूल में कवि की भाव संवेदन भावना रहती है जो उसे भावों की सहज अभिव्यक्ति और सम्प्रेषण के लिए बिम्ब योजना के लिए प्रेरित करती है। काव्य को अधिकाधिक संवेद्य बनाना काव्य का प्रमुख लक्षण है, क्योंकि बिम्ब ही अमूर्त भावों को मूर्त रूप प्रदान कर आवेशमय जटिल अभिव्यक्ति को भी सहज बना देता है। आध्यात्मिक साधना के लिए निर्वेद के तीव्र भाव जगाने के निमित्त कबीर कहते हैं –

कबीरा खड़ा बाज़ार में, लिये लुकाठा हाथ

जो घर जलै आपना, चले हमारे साथ।

यहाँ लुकाठा की कल्पना से भाव की तीव्रानुभूति प्राप्त होती है।

3) वस्तु या घटना को प्रत्यक्ष कराना (प्रत्यक्षीकरण)

बिंबयोजना का सबसे अधिक प्रभावी कार्य वस्तु या घटना को प्रत्यक्ष कराना है। इस कार्य द्वारा कल्पना तथा मन पर तुरंत प्रभाव पड़ता है और वस्तु या घटना उस रूप में हमारे सामने उपस्थित हो जाती है जिस रूप में कवि उसे प्रत्यक्ष कराना चाहता है। बिंबयोजना का यह एक सहज रूप है। इसी प्रक्रिया से कवि चरित्र का व्यक्तित्व भी प्रस्तुत करता है।

कनक भूधराकार सरीरा। कुंभकरन आवत रनधीरा।

यहाँ पर कुंभकर्ण के व्यक्तित्व का प्रस्तुत किया है।

2) चारु चन्द्र की चंचल किरणें छिटक रही थीं जल थल में

विमल चाँदनी बिछी हुयी थी अवनि और अंबरतल में

पुलक प्रकट करती थी धरती हरित तृणों की नोकों से

मानो झीम रहे थे तरु भी मंद पवन की झोकों से

यहाँ पर चाँदनी रात में प्रकृति का प्रत्यक्षीकरण किया है।

4) रूप, सौन्दर्य या गुण को हृदयगम बनाना

रूप सौन्दर्य और गुण का चित्रण काव्य में सर्वाधिक मिलता है। इस चित्रण के हेतु बिंबविधान अत्यंत सहायक होता है। प्राचीन काल से कवि इसका प्रयोग करते आए हैं बिंबयोजना की नव्यता इन चित्रणों में एक ताज़गी भर देती है।

कोमल किशोर सुंदरता की मैं करती रहती रखवाली
मैं वह हल्की-सी मसलन हूँ जो बनती कानों की लाली।